शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण
सत्र 1: शिष्य बनाओ, धर्मान्तरित नहीं
रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: **मत्ती 28:19-20**
19 इसलिये जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।
उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देना,
20 और उन्हें सिखाया कि जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, उसका पालन करें।
और देखो, मैं युग के अन्त तक सदा तेरे साथ हूँ।

चरण 3: बाइबल अध्याय पढ़ें और चर्चा करें - **मत्ती 28**

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक.क्या हम समझते हैं कि क्या यीशु, हमारे प्रभु ने हमें बनने और करने का आदेश दिया है?

दो. धर्मान्तरित लोग मसीह में विश्वास कैसे करते हैं? फिर, वे शिष्य कैसे बन जाते हैं?

तीन.चर्चा करें कि धर्मान्तरित और शिष्य बनाना किसकी जिम्मेदारी है? निहितार्थों पर चर्चा करें।

चार.मसीह के राज्य के निर्माण के लिए उसके संदेश और तरीके का पालन करना क्यों महत्वपूर्ण है?

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

पुस्तक से परिचय:
यीशु एक गिरी हुई जाति को बचाने और ऐसे लोगों को खड़ा करने के लिए आया था जो हमेशा के लिए उसकी स्तुति करेंगे। इस मिशन के निर्वहन में, उसने एक सेवक के रूप में हमारे बीच सेवा की, बीमारों की देखभाल की, टूटे हुए दिल वालों को चंगा किया, और भीड़ को सुसमाचार का प्रचार किया। लेकिन इन सब के माध्यम से उसने अपना ध्यान शिष्य बनाने पर केंद्रित किया - ऐसे व्यक्ति जो उसके बारे में सीखेंगे और उसके कदमों का अनुसरण करेंगे।

उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, स्वर्ग में वापस चढ़ने से पहले, उसने इन अनुयायियों से कहा कि "जाओ और सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ। " वे समझ सकते थे कि उसका क्या मतलब था, क्योंकि वह केवल उनसे वही जारी रखने के लिए कह रहा था जो उसने उनके साथ अभ्यास किया था। महान आदेश कार्रवाई के एक नए पाठ्यक्रम के लिए एक बुलावा नहीं है, बल्कि उसके अपने मिशन के तरीके की व्याख्या है।

अपनी सादगी में सरल, यह परमेश्वर के लिए दुनिया तक पहुंचने की मसीह की योजना का सार था। वह जानता था कि यह विफल नहीं हो सकता। क्योंकि सच्चे शिष्य न केवल अपने स्वामी की समानता में बढ़ेंगे; समय के साथ, उसकी आत्मा के द्वारा, वे दूसरों में उसके जीवन को पुन: उत्पन्न करेंगे।

यह भी स्पष्ट है, यह रणनीति प्रत्येक ईसाई के व्यवसाय के भीतर यीशु की सेवकाई पर जोर देती है। यह सुनिश्चित करने के लिए, बहुत से लोगों को एक महान मण्डली के पादरी के लिए नहीं बुलाया जाता है या यहां तक कि संडे स्कूल की कक्षा भी पढ़ाया

जाता है, लेकिन सभी को शिष्यों के निर्माण में भाग लेने के लिए बुलाया जाता है। उसका आदेश कोई विशेष उपहार नहीं है; यह एक आज्ञा है, और जो लोग मसीह पर विश्वास करते हैं, उनके पास आज्ञा मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

फिर भी आज चर्च में इस दायित्व को शायद ही कभी माना जाता है। ऐसा नहीं है कि जनादेश से इनकार किया जाता है, लेकिन यह कि ज्यादातर लोगों को पता नहीं है कि यह उनके जीवन के दैनिक कार्य से कैसे संबंधित है।

इसलिए इस पुस्तक का इतना स्वागत है। यह अनुशासन के व्यावहारिक पहलुओं तक पहुंच जाता है। इस मंत्रालय में व्यापक अनुभव से लिखते हुए, डॉ. कीथ फिलिप्स उन सिद्धांतों को साझा करते हैं जो उन्होंने मसीह के मार्ग में व्यक्तियों की अगुवाई करने की प्रक्रिया, श्रमसाध्य प्रक्रिया में सीखे हैं।

वह इस आधार पर बनाता है कि कौशल को चमकाने की तुलना में चरित्र विकसित करना अधिक महत्वपूर्ण है। "आपको परमेश्वर का व्यक्ति होना चाहिए," वह लिखता है, "इससे पहले कि आप परमेश्वर का कार्य कर सकें। इस दृष्टिकोण के लिए मूल आत्म-केंद्रितता के लिए मरने वाले व्यक्ति की बाइबिल की आवश्यकता है, ताकि मसीह के हृदय में निर्विवाद शासन हो। इस प्रतिबद्धता को रेखांकित करना ईश्वरीय अधिकार के प्रति अधीनता का एक दृष्टिकोण है, एक भक्ति जो मजबूत व्यक्तिगत अनुशासन, बहिर्मुखी प्रेम और समुदाय की भावना में परिलक्षित होती है।

लेखक विस्तार से बताता है कि इस तरह के विकास को कैसे बढ़ावा दिया जाता है, शिष्य और शिष्य दोनों के जीवन में आवश्यक अवयवों की ओर इशारा करता है। आप देखेंगे कि यह कोई आसान काम नहीं है। और कोई शॉर्टकट नहीं हैं। इस काम को करने के लिए दृढ़ संकल्प और बलिदानपूर्ण करुणा होनी चाहिए।

यहीं पर, अंत में, हम सभी को इस मुद्दे का सामना करना चाहिए। क्या हम कीमत चुकाने को तैयार हैं? यह विश्वास करते हुए कि यह पुस्तक हमें और अधिक आवश्यकता का एहसास करने में मदद करेगी, और हमें अपने गुरु के कार्य में एक आत्मविश्वास, उद्देश्यपूर्ण भागीदारी की ओर प्रेरित करेगी, इसे आपको बताते हुए खुशी हो रही है। - रॉबर्ट ई. कोलमैन

अध्याय 1 लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

पहले महीने जब मैं वाट्स में था, मैंने एक हत्या देखी।

रॉनी एक चंचल छोटा बच्चा था जो ऊर्जा से भर रहा था। उन्होंने बच्चों के बाइबिल क्लब में भाग लिया था जिसे मैंने कुछ हफ्ते पहले एक संघीय आवास परियोजना में शुरू किया था। उन्होंने इस विशेष दिन पर मेरा ध्यान आकर्षित किया क्योंकि वह टूटे हुए कांच से ढके मैदान में नंगे पैर चल रहे थे। मैं कल्पना नहीं कर सकता था कि उसने अपने पैरों को टुकड़ों में काटने से कैसे बचाया। फिर भी उसे दुनिया में कोई परवाह नहीं थी।

अचानक एक बड़ा लड़का रॉनी के पास पहुंचा, उसकी छाती में छुरा घोंपा, उसका ट्रांजिस्टर रेडियो पकड़ लिया और भाग गया। रॉनी जमीन पर गिर गया।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। मुझे ठंडे पसीने से तरबतर हो गया। मेरी हथेलियाँ चिपचिपी हो गईं। जब मैं उसकी ओर दौड़ा तो मेरा दिल दौड़ गया। मुझे डर था कि कोई मुझसे मदद करने के लिए कहेगा। मैं चाहता था, लेकिन मुझे नहीं पता था कि क्या करना है। इसलिए, मैं भीड़ में खोया हुआ खड़ा था।

रॉनी के शरीर के आसपास इकट्ठा हुए बच्चों और किशोरों की प्रतिक्रिया ने मुझे स्तब्ध कर दिया। मुझे शत्रुता और आक्रोश की उम्मीद थी, लेकिन इसके बजाय उन्होंने ऐसा व्यवहार किया जैसे कि वे एक कार्निवल में थे। जब पुलिस आई तो उन्होंने चिल्लाया और एम्बुलेंस आने पर खुशी मचाई। वे हँसे, चिल्लाए और अन्य हत्याओं के बारे में कहानियों के साथ एक-दूसरे से

आगे निकलने की कोशिश की। किसी को भी रॉनी की परवाह नहीं थी। यहां तक कि उनके अपने भाई ने भी कोई दुख नहीं दिखाया।

मैं वहां अनंत काल तक खड़ा रहा। जो मेरे लिए पूरी तरह से भयानक था वह स्पष्ट रूप से बाकी सभी के लिए एक सामान्य घटना थी। लेकिन यह केवल शुरुआत थी, झटकों की एक श्रृंखला में पहली थी जो इस मिशन क्षेत्र के लिए मेरा दिल तोड़ने वाली थी जिसके लिए भगवान ने मुझे बुलाया था।

जैसे ही मैं उस खेत से दूर चला गया जहां रॉनी की मृत्यु हुई थी, जिमी नाम के एक युवक ने मुझे बताया, "यह कोई बड़ी बात नहीं है। यहां हर समय लोग मारे जाते हैं। मेरे एक साल के चचेरे भाई की कुछ महीने पहले हत्या कर दी गई थी। वह सुबह दो बजे चिल्ला रहा था क्योंकि वह बीमार था। उसकी माँ असली पागल थी। उसने उसे बिस्तर से बाहर पकड़ लिया और खिड़की से बाहर फेंक दिया। उसका सिर टूट गया..."

जितना अधिक मैंने सुना, उतना ही मैंने सीखा।

जिन बच्चों से मैं मिला उनमें से कोई भी अपने पिता को नहीं जानता था। यह उन्हें परेशान नहीं करता था। यह बस ऐसा ही था।

पहले तो मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि डेरेल मुझे सच बता रहा था जब उसने कहा कि उसने तीन दिनों से खाना नहीं खाया था। मुझे पता था कि अमेरिका में कोई भी भूखा नहीं था। मुझे लगा कि वह मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है। लेकिन फिर मुझे पता चला कि उसकी माँ, एक नशेड़ी, ने अपनी अल्प आय नशीले पदार्थों पर खर्च की।

मुझे पता था कि बारह वर्षीय टेरेसा का एक बच्चा था, लेकिन जब उसने मुझे बताया कि उसका बच्चा उसका भाई था तो वह हैरान रह गई। बाद में मुझे पता चला कि यह टेरेसा के पिता थे जिन्होंने उसे गर्भवती किया था।

सोलह वर्षीय रोंडा थी, जो दो सप्ताह की मां थी, जो अपने बच्चे के रोने को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। वह ड्रग्स पर चढ़ गई और अपने बेटे को अपनी मुट्ठी से पीटा, उसकी पसलियों को तोड़ दिया और उसके फेफड़ों को पंचर कर दिया।

नौ वर्षीय बेलिंडा अपने चाचा से यौन शोषण के लगातार आतंक में रहती थी। उसकी माँ ने परवाह नहीं की। उसके भाई-बहन बस हंसते थे और उसका मजाक उड़ाते थे।

यहूदी बस्ती में भयानक गिरावट और निराशा ने मुझे चौंका दिया। यह एक अलग दुनिया में कदम रखने जैसा था: भूख, दुर्व्यवहार, ड्रग्स, मृत्यु, बारह वर्षीय माताएं, नाजायज बच्चे। किसी ने आंख नहीं झपकाई। किसी ने परवाह नहीं की।

मैं जानता था कि यीशु को इन महान शारीरिक और आध्यात्मिक जरूरतों का जवाब होना चाहिए। लेकिन मुझे नहीं पता था कि यहूदी बस्ती के लिए सुसमाचार को कैसे प्रासंगिक बनाया जाए।

मेरे साथ एकमात्र दृष्टिकोण जो हुआ वह सामूहिक सुसमाचार प्रचार था। इसलिए मैंने वाट्स में बच्चों के बाइबिल क्लब शुरू किए। कई बच्चे आए। वे सभी "यीशु को स्वीकार करना" चाहते थे! और वे सभी अपने दोस्तों को लाना चाहते थे। माताओं ने अपने बच्चों को "धर्म प्राप्त करने" की सराहना की, और किशोर यह जानने के लिए उत्सुक थे कि उनके लिए क्लब कब शुरू होंगे। कुछ वर्षों के भीतर 300 ईसाई कॉलेज स्वयंसेवक सैकड़ों बच्चों को साप्ताहिक बाइबल अध्ययन सिखाने में मेरे साथ शामिल हो गए।

हमने सुसमाचार प्रचार सभाओं का आयोजन किया। बहुत से लोग भाग लेते थे—कुछ सिर्फ "उन गोरे लोगों" को देखने के लिए। मैं एक साधारण उद्धार संदेश का प्रचार करता था, और हमेशा लगभग हर कोई अपने पापों को क्षमा करने और परमेश्वर के साथ शांति से रहने की इच्छा को इंगित करने के लिए अपना हाथ उठाता था। सावधानी से हमने निर्णय कार्ड भरे और ईमानदारी से प्रत्येक नए परिवर्तित व्यक्ति को अनुवर्ती सामग्री भेजी, यह महसूस नहीं किया कि उनमें से कई अनपढ़ थे।

मैं एक नशेड़ी या उपेक्षित बच्चे के साथ प्रार्थना करूंगा, कहूंगा "भगवान आपका भला करे," और फिर चले जाएंगे। चूंकि मैं संभवतः इन सभी नए ईसाइयों की चरवाही नहीं कर सकता था, इसलिए मैंने तर्क दिया कि पवित्र आत्मा उनकी देखभाल करेगा।

लॉस एंजिल्स यहूदी बस्ती में सैकड़ों लोगों ने "मसीह को स्वीकार किया। मेरे दोस्तों ने मेरी पीठ थपथपाई और मुझे आश्वासन दिया कि मैं अच्छा काम कर रहा हूं। मैं उन पर विश्वास करना चाहता था। और थोड़ी देर के लिए, मैंने किया।

लेकिन जैसे-जैसे महीने वर्षों में मिश्रित होते गए, मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि एक गंभीर समस्या थी। मसीह के लिए इन सभी निर्णयों के साथ जीवन बदलना चाहिए था - उनमें से सैकड़ों। लेकिन मैंने जितनी मेहनत की, मुझे एक भी नहीं मिला! कुछ गलत हो गया था।

आंशिक रूप से गर्व के कारण, आंशिक रूप से अज्ञानता के कारण, मैं उम्मीद करता रहा कि चीजें किसी तरह अपने आप ठीक हो जाएंगी। लेकिन मैं इस कुतरने वाली भावना को हिला नहीं सका कि सब कुछ व्यर्थ हो गया था। कोई स्थायी फल नहीं था। मेरे बाइबल क्लबों में टर्नओवर दर बहुत अधिक थी। हर हफ्ते अलग-अलग युवा आते थे। जिन किशोरों ने बच्चों के रूप में मसीह के बारे में सीखा था, वे अभी भी मिलनसार थे, लेकिन वे दलाल, वेश्या या धक्का देने वाले बन गए थे। बाइबल क्लब के पूर्व बच्चे सड़क पर गिरोहों के साथ भाग रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सुसमाचार ने काम नहीं किया था।

मैं हतोत्साहित था। मैंने लगभग छोड़ दिया।

हताशा में मैं परमेश्वर के वचन पर गया। अपने जीवन में पहली बार मैं यह देखना चाहता था कि परमेश्वर ने क्या कहा, न कि जो मैं पहले से जानता था उसे साबित करने के लिए।

जब मैंने मत्ती 28:19,20 पढ़ा, तो मुझे एक चौंकाने वाला रहस्योद्घाटन मिला। मसीह का कलीसिया के लिए आदेश "परिवर्तित करना" नहीं था, बल्कि "शिष्य बनाना" था। बस इतना ही! भले ही मैं सभी निहितार्थों को नहीं समझ पाया, फिर भी मुझे तुरंत पता चल गया कि शिष्यत्व मेरी सेवकाई में गायब घटक था।

मेरे इंजीलवादी बेल्ट पर सैकड़ों निशान थे, लेकिन मैं एक परिपक्व ईसाई का पता नहीं लगा सका। मैंने सुसमाचार की घोषणा की थी, लेकिन मैं शिष्य बनाने में विफल रहा था।

जितना अधिक मैंने नए नियम का अध्ययन किया, मेरा नया विश्वास उतना ही मजबूत होता गया। शिष्यत्व आध्यात्मिक बच्चों में कुपोषण और कमजोरी से बचने का एकमात्र तरीका है जिनके लिए मैं जिम्मेदार हूं। यह एकमात्र तरीका है जो परिपक्व ईसाइयों को उत्पन्न करेगा जो यहूदी बस्ती में शारीरिक और आध्यात्मिक क्षय को उलट सकते हैं।

मुझे पता था कि सेवकाई के प्रति मेरे प्रारंभिक दृष्टिकोण से परमेश्वर दुखी था। मैंने एक प्रतिबद्धता जताई कि उस समय से मैं हर उस संसाधन पर ध्यान केंद्रित करूंगा जो प्रभु मुझे शिष्य बनाने पर देंगे।

" (पेज 11-14)

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करके और प्रत्येक व्यक्ति अन्य अनुरोधों के लिए प्रार्थना करके समाप्त करें।*

मूल: एक शिष्य का निर्माण डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981 पब। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है

संशोधित 20261011